SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

Chapter-6

अध्याय--6

उपसंहार

उपसंहार

कहानी एक ऐसी विधा है जो हर काल में विभिन्न रूपों प्राप्त होती है। आदिकाल से मानवी अपने बचपन से ही कहानी सुनता आया है और आज भी हर बच्चा कहानी सुनने को लालायित रहता है। हलॉकि साहित्य में कहानी विधा के रूप में परिनिष्ठित होकर सामने आती है। हर काल के साहित्य में उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितयों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सांप्रत समय में कहानी साहित्य की लोकप्रिय विधा है। हलॉकि पाश्चात्य साहित्य में कभी-कभी शार्ट स्टोरी शीर्षक के अन्तर्गत लम्बी कहानियॉ भी लिखी जाती है। जैसे ओ.एनरी, गाय डी. मुँपासॉ, एन्टन चेखोव इत्यादि कहानीकार पचास-पचास पन्नों में विस्तृत कहानियॉं भी देते हैं पर हमारे साहित्य में लघु स्वरूप ही कहानी नाम से जाना जाता है, जो एक बैठक में पढ़ी जा सके, जिसके पात्र मर्यादित हो, छोटे कालखण्ड को प्रस्तुत करती हो, पात्रानुरूप वातावरण हो और जिसमें विस्तृत वर्णन का सर्वथा अभाव हो। हमारे साहित्य में कहानी जीवन के किसी एक अंग या प्रधान घटना को प्रस्तुत करती है। जबकि उपन्यास का फलक विशाल होने के कारण उसमें कई समस्याओं का चित्रण होता है।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में भारतीय समाज की कुरीतियों का बखूबी प्रतिपादन किया है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में उस समय के वास्तविक भारत को अपने पात्रों एवं संवादों के माध्यम से सही मायने में चरितार्थ किया है। प्रेमचंदजी गांधीजी से प्रभावित थे, इसके साथ-साथ वे भारत के किसानों एवं दलितों पर हो रहे अतयाचार के खिलाफ थे। पूंजीपतियों द्वारा किये जाने वाले शोषण का खुले रूप से विरोध न कर पाने के कारण अपनी लेखनी को उन्होंने माध्यम बनाया। प्रेमचंद एक आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी लेखक थे, जिन्होंने श्रृंगार, भकित को छोड़कर भारत के लोगों की स्थिति की वास्तविकता को अपने साहित्य के माध्यम से दर्शाया है। वे पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने किसानों, मजदूरों, पीड़ितों, स्त्रियों, अछूतों, के जीवन की वास्तविकता को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया।

एक तरफ हमारा देश आजादी की लड़ाई लड़ रहा था, ताकि हमें अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति मिल सके तो दूसरी तरफ एक ऐसा भारत भी था जो अंग्रेजों की गुलामी तो नहीं करता था लेकिन सामंतो, पूंजीपतियों एवं धार्मिक गुरुओं की न केवल गुलामी करता था बल्कि उनसे शोषित भी हो रहा था। शोषकवर्ग निचले वर्ग के लोगों को दीमक की तरह अन्दर से खोखला कर रहा था। यह हमारे देश की विडम्बना थी कि हमारे देश में शोषकवर्ग का प्रमाण ज्यादा था। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में

भारतीय समाज की हर कुनीति को दर्शाया है। प्रेमचंद की क़हानियों का चयन करने पर मुझे पता चला कि उन्हें कहानी सम्राट क्यों कहा जाता है। प्रेमचंद की हर कहानी भारतीय समाज की किसी न किसी रूढ़िगत परंपरा का खंडन करती दिखाई देती है। मेरे शोधप्रबन्ध का विषय 'नवजागरण काल' पर आधारित है। नवजागरण काल में भी भारतीय समाज की कुरीतियों का खंडन-मंडन उस समय के समाज-सुधारकों ने किया था और प्रेमचंदजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से उन समाज सुधारकों का साथ दे रहे थे। इसीलिए तो प्रेमचंद को 'कलम का सिपाही' कहा जाता है। प्रेमचंदजी गरमदल और नरमदल के मध्यस्थी थे। गरमदल यानी सुभाषचन्द्र बोस की विचारधारा पर चलने वाले लोग और नरमदल यानी कि गांधीजी की विचारधारा पर चलने वाले लोग। इन दोनों के आजादी प्राप्त करने के मार्ग अलग अलग थे। प्रेमचंद ने इन दोनों के बीच का मध्यस्थ रास्ता अपनी लेखनी के माध्यम से निकाला। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंदजी ने जो गौरव प्राप्त किया है, उसका महत्व अनिवर्चनीय हे। उनके कथा साहित्य में हमें सर्वप्रथम मानचरित्र की पहचान उपलब्ध होती है। प्रेमचंदजी के कथा साहित्य में मध्यमवर्ग की दयनीय स्थिति का हृदयस्पर्शी यथार्थोन्मुखी चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद पर पहले काफी काम हो चुका हो पर नवजागरण से संबंधित उनकी संपूर्ण कहानियों को मैनें **"नवजागरण काल के सन्दर्भ में प्रेमचंद की कहानयॉं: एक अनुशीलन"** विषय लेकर अपना शोधकार्य पूर्ण किया है। अपने इस शोधकार्य के लिए यथा संभव पूर्वाग्रह रहित तटस्थ समाजिक दृष्टिकोण अपनाया है।

प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत मैंने निष्पक्ष विश्लेषण करने का प्रयास किया है। इस शोधप्रबन्ध में कुल छ: अध्याय है जो इस प्रकार हैं--

अध्याय - 1 'प्रेमचंदजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व" का है। जिसके अन्तर्गत मैंने प्रेमचंदजी का जन्म, बचपन, शिक्षा, पारिवारिक जीवन, साहित्यक जीवन, उनके जीवन संघर्ष तथा उनके अन्तिम यात्रा तक के सफर को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। प्रेमचंद जैसे साहित्य सम्राट ने भी अपनी जिन्दगी में किस तरह से विषम परिस्थितियों का सामना किया है, उसे प्रस्तुत करने का यथासंभव प्रयास किया गया है। मैनें अपने शोधप्रबन्ध में प्रेमचंद तथा उनके परिजनों की छबियों को भी प्रस्तुत किया है। इसके उपरान्त प्रेमचंद का स्वयं का शैक्षणिक लगाव एवं उनकी कृतियॉं, जिसमें उर्दू उपन्यास, उर्दू लघुकथाऍं, उर्दू नाटक, उर्दू जीवनियॉं, उर्दू में अनूदित पुस्तकें, उर्दू लेख संग्रह तथा हिन्दी उपन्यासों की सूची, हिन्दी कहानी संग्रहों के नाम, हिन्दी लेख, हिन्दी नाटक, हिन्दी में अनूदित संग्रह, हिन्दी के पत्र संग्रह आदि की सूची दी है। अंत में प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

अध्याय-2 "नवजागरण और हिन्दी साहित्य" का है। जिसको मैंने कई उप-अध्यायों में विभाजित किया है। जिसमें **प्रथम उप-अध्याय "नवजागरण का उद्भव और विकास"** का है। जिसके अन्तर्गत नवजागरण की उत्पत्ति विदेश में कैसे हुई और उसका क्या परिणाम आया यह दर्शाया गया है। साथ ही साथ भारत में नवजागरण किन कारणों से आया और इसका परिणाम आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक और साहित्यिक क्षेत्र में क्या आया इसको दर्शाने का प्रयास किया गया है। मैनें विश्वसाहित्य पर आधारित कई पुस्तकों का चयन किया और बाद में इस उप अध्याय को सही रूप से न्याय देने का प्रयास किया। नवजागरण काल जिसे अंग्रेजी में रेनेसॉ कहा जाता है, वह मूलरूप में पश्चिम की देन है। उसका प्रभाव भारत में बड़े समय के अन्तराल के बाद आया। उसके आते-आते काफी समय बीत गया था। इस दौरान भारत अपनी रूढ़िगत मान्यताओं परम्पराओं तथा कुरीतियों के कारण अपनी समृद्धि संस्कृति का अवमूल्यन कर रहा था।

भारत में सवर्ण निम्नवर्ण को अपनी ही बनाई परंपराओं से यातनाएं देते थे। निमनवर्ग के अलावा भारतीय परंपराओं का सबसे ज्यादा भोग स्त्री बनी थी। लेकिन 1857 ई. स. के विप्लव के बाद तथा अंग्रेजों की मदद से राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधाराकों ने भारत की रूढ़िगत परंपराओं का खण्डन किया। मैंने अपने इस शोधप्रबन्ध में भारत में नवजागरण के आने का कारण तथा उसके परिणामों को विभिन्न प्रकार के बिंदुओं के आधीन प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया हैं

द्वितीय उप-अध्याय-2 "पूर्ववर्ती साहित्य और नवजागरण" के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल में रचना की गई साहित्यक कृतियों की चर्चा करते हुए उस समय के भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थिति को दशार्या है।

उस समय के साहित्यकारों की भाषा शैली, रचनाएं रचनाओं की कथावस्तु, पात्र, चरित्र-चित्रण एवं रचनाकारों की विशेषताओं को दर्शाया गया है। इसके साथ ही साथ नवजागरण काल के आने के बाद साहित्य में आ रहे परिवर्तन को भी दर्शाया गया है। नवजागरण काल में पूर्ववर्ती साहित्य की तरह पद्य का प्रयोग ज्यादा न करते हुए गद्य विधा का प्रारंभ दिखाई देता है। तथा इस काल के लेखक राज्याश्रयी रचना न करके देशभक्ति एवं सामाजिक यर्थाथता को प्रस्तुत करने वाली रचनाओं का निरूपण करते थे। नवजगरण काल से ही हिन्दी साहित्य में विभिन्न विधाओं का प्रारंभ दिखाई देता है और यही आधुनिक काल को समृद्ध बनाने के लिए कारणभूत हैं। यहाँ मैने आधुनिक काल को समृद्ध

बनाने के लिए विभिन्न साहित्यक विधाओं की सूची दी है क्योंकि इसकी चर्चा आगे इस अध्याय के उप-अध्याय चार में की गई है।

उप-अध्याय-तृतीय "लोकजागरण एवं नवजागरण में अन्तर'' के अन्तर्गत मैनें 14 वीं सदी के समय भारत में आए लोकजागरण तथा उससे होने वाले परिवर्तन को दर्शाने का प्रयत्न किया है। 14 वीं सदी के दौरान भारत में मुगल सल्तनत ने जिस तरह भारतीय संस्कृति, भारतीय मंदिरों, धर्मग्रंथों को तहस-नहस कर दिया था, उसकी चर्चा की है। साथ ही मुगलों ने धार्मिक यज्ञों, विधिओं आदि पर अपनी दमन नीति लागू कर रखी थी। भारतीय प्रजा भी मुगलों से त्रस्त हो चुकी थी और उन्हें भगवान पर से भी विश्वास हटता जा रहा था। भारतीयों की सोच इस हद तक आ चुकी थी कि मुगलों के ही भगवान सही है। इसी समय में भारतीयों को जगाने और उनका भगवान पर विश्वास बनाये रखने के लिए कई कवियों जैसे तुलसी, सूर, कबीर, जायसी आदि ने अपने साहित्य के माध्यम से निराश जनता में प्राण फूंकने का काम किया। कृष्णलीला, रामचरित्र एवं निर्गुण ईश्वर की परिकल्पना ने भारतीयों में श्रद्धा जगाई और वे इसी के आधार पर मुगलों का सामना कर पाए। लोगों में आई इस जागृति को लोकजागरण कहा गया। लोकजागरण तथा उससे होने वाले सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक कारणों एवं उसके प्रभाव से स्थापत्य कला, विभिन्न भाषाओं का जन्म और हिन्दी साहित्य में आए परिवर्तन को दर्शाने का नम्र प्रयास किया गया है। साथ ही साथ नवजागरण काल से विभिन्न क्षेत्रों में आए परिवर्तन एवं धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्य के आधार पर लोकजागरण और नवजागरण के अन्तर को भी स्पष्ट किया गया है।

उप-अध्याय-4 "नवजागरण और विविध साहित्यक विधाएं'' में मैंने नवजागरण का संक्षिप्त परिचय देते हुए नवजागरण से उत्पन्न हुई विविध आधुनिक साहित्यिक विधाओं जैसे-नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध, रिपोतार्ज, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आलोचना, डायरी, पत्र-पत्रिकाएं आदि गद्य विधाओं के साथ-साथ विविध पद्य विधाओं जैसे महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक आदि की यथासंभव चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

अध्याय-3 'प्रेमचंद और हिन्दी कहानी'' है। जिसे मैंने अध्याय-2 की भाँति विभिन्न उप-अध्यायों में विभाजित किया हैं इसमें कुल 4 उप-अध्याय है। जिसमें पहले **उप-अध्याय "पूर्व प्रेमचंद युग और हिन्दी कहानी''** के अन्तर्गत मैंने कहानी की उत्पत्ति एवं अर्थ समझाते हुए उसकी परिभाषा, स्वरूप और उसकी विकास यात्रा की चर्चा की है।

कहानी का आदि स्वरूप हमें संस्कृत साहित्य में पंचतंत्र और हितोपदेश में दिखाई देता है परंतु सही मायने में कहानी का विकास व परिपक्व रूप हमें नवजागरण काल में दिखाई देता है। शुरुआती दौर में जासूसी और ऐयारी कहानियाँ लिखी जाती थी लेकिन बाद में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, कुरीतियों पर आधारित एवं देश भक्ति पर आधारित कहानियों की रचना की जाने लगी। वास्तव में कहानी विधा को प्रेमचंदजी ने ही समृद्ध किया इसलिए उन्हें 'कहानी सम्राट' के नाम से भी जाना जाता है। मैने इस अध्याय में प्रेमचंद युग एवं हिन्दी साहित्य की प्रथम मानी जाने वाली ग्यारह कहानियों के शीर्षक, लेखक का नाम और प्रकाशन वर्ष भी दिया है। इस पर दिए गये विभिन्न साहित्यकारों के मत को भी मैने दर्शाने का प्रयत्न किया है। इन ग्यारह कहानियों को ही क्यों पहली कहानी कहा जाता है इसका जिक्र भी किया है। इसके अलावा कहानी के विभिन्न भेदों को भी दर्शाया गया है तथा साथ ही कहानी के विभिन्न भेदों की सूची भी चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत की गई है।

दूसरे उप-अध्याय-"स्वधीनता आंदोलन और प्रेमचंद" के अन्तर्गत मैंने अंग्रेजों के भारत आगमन के पूर्व और उसके बाद की भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थिति को दर्शाने का प्रयत्न किया है। तथा भारत की जनता किस तरह मुगलों एवं अंग्रेजों से पीड़ित थी इसको भी यथायोग्य समझाने का प्रयत्न किया है। अंग्रेजों ने व्यापार के नाम पर जिस तरह से भारत को अपने हस्तक कर लिया तथा यहाँ की जनता की संस्कृति को, उनके गृह-उद्योगों को तथा व्यापार को भी किस तरह नष्ट किया है उसका वर्णन भी इसी अध्याय के अन्तर्गत किया गया है। 1857 के विप्लव ने भारतवासियों में स्वाभिमान जगा दिया और तभी से स्वाधीनता आन्दोलन की मुहिम शुरू हो गई। इस मुहिम को गांधीजी, सुभाषचंद बोस, भगतसिंह, सरदार वल्लभभाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने आगे बढ़ाया। इन नेताओं ने देश की आजादी के साथ-साथ भारतीय रूढ़ियों का भी खण्डन किया। साहित्य में भी इस राजनीतिक उथल-पुथल का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। प्रेमचंद गांधीजी से काफी प्रभावित थे। इसी कारण उन्होंने अपनी शिक्षक की नौकरी छोड़कर स्वाधीनता आन्दोलन में जुड़ तो गये लेकिन पारिवारिक समस्याओं के कारण उन्हें पुन: नौकरी करनी पड़ी। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में भारतीय समाज की स्वाधीनता से लेकर उनकी कूपमंडूकता तक को दर्शाया है।

तीसरे उप-अध्याय-"आधुनिकता एवं हिन्दी कहानी और प्रेमचंद" के अन्तर्गत मैंने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि नवजागरण की वजह से भारतीय समाज व्यवस्था, धार्मिकता तथा मनुष्य की सोच के परिणाम स्वरूप जिस आधुनिकता का जन्म हुआ तथा उसका साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा और इस आधुनिकता के दौर में हिन्दी कहानी का साहित्य किस चरम सीमा तक विकास पा सका है इसकी चर्चा

करने की कोशिश की है। अंग्रेजों ने रेल, तार, प्रेस आदि की शुरुआत अपने व्यापार हेतु की थी और इन्हीं संसाधनो ने भारतीयों में नवजागरण का बीज अंकुरित किया। लोग छुआछूत जैसी मान्यताओं से दूर होते गये। यहीं से आधुनिकता का प्रारम्भ माना जाता है। आधुनिकता ने मानवी की न केवल सोच बदली, लेकिन इस सोच का असर साहित्य में भी देखने को मिलती है। प्रेमचंद की कहानियाँ इसीलिए तो भारतीय समाज की हर कुपरंपरा का खंडन खुले रूप से करती हुई दिखाई देती है। आधुनिकता ने ही लोगों में इतनी शक्ति का संचार किया कि उन्होंने भारत में चल रही हर बुराई का सामना अपने विद्रोह से शुरू किया और साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से उनका साथ दिया। इस आधुनिकता की असर प्रेमचंद के साहित्य पर भी पूर्णरूपेण दिखाई देती है।

अध्याय-4 "नवजागरण और प्रेमचंद" का है। जिसे मैंने तीन उप-अध्यायों में विभक्त किया है। जिसमें **प्रथम उप-अध्याय "नवजागरण और प्रेमचंद की कहानियाँ"** में मैंने नवजागरण का सामान्य परिचय देते हुए उसका प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों जैसे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक आदि में किस प्रकार देखने को मिलता है उसकी संक्षिप्त चर्चा करने का प्रयत्न किया है। नवजागरण के आधार पर प्रेमचंद की कहानियों में हमें प्रेमचंदयुगीन यथार्थ भारत का दर्शन दिखाई देता है। प्रेमचंद की कहानियों में उस समय की विद्यमान कुरीतियों और परम्पराओं के साथ मुख्य समस्याएं जैसे दलितवर्ग, मध्यमवर्ग और नारियों पर हो अत्याचार का भी संक्षिप्त वर्णन किया गया।

द्वितीय उप-अध्याय "नवजागरण से संबंधित प्रेमचंद की कहानियाँ" में मैने प्रेमचंद की 301 कहानियों में से मात्र 38 ऐसी कहानियाँ अलग की जिसमें पूर्ण रूप से नवजागरण देखने को मिलता है। इन 38 कहानियों को मैंने 15 विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत रखा है। यथा

1. छुआछूत का विरोध करती कहानियाँ
2. विधवा विवाह का समर्थन करती कहानियाँ
3. अनमेल विवाह का विरोध करती कहानी
4. दहेज प्रथा का विरोध करती कहानियाँ
5. अपशकुन का विरोध करती कहानियाँ
6. प्रर्दाप्रथा का विरोध करती कहानी
7. संयुक्त परिवार की पक्षधर कहानी
8. परिवार नियोजन पर आधारित कहानियाँ
9. महाजनी सभ्यता का विरोध करती कहानियाँ

10. पूंजीपति प्रथा का विरोध करती कहानियाँ
11. स्वाभिमान परक कहनियाँ
12. राष्ट्रीय एकता पर आधारित कहानी
13. धर्म एवं साम्प्रदायिकता का विरोध करती कहानियाँ
14. नशाबन्दी से सम्बन्धित कहानियाँ
15. स्वदेशी वस्त्रों की पक्षधर कहानियाँ

इन सभी कहानियों में प्रेमचंदजी ने जहाँ पर नवजागरण को उजागर किया है, तथा विभिन्न लेखकों द्वारा उस पर दिए गये मत को भी यथासंभव मैनें प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

तृतीय उप-अध्याय 'प्रेमचंद की कहानियों की भाषा शैली'' के अन्तर्गत मैंने प्रेमचंद की कहानियों में भाषा-शैली का प्रयोग किस रूप में हुआ है इसका संक्षिप्त परिचय दिया है। प्रेमचंदजी एक ऐसे पहले साहित्यकार हैं जिन्होंने आम् जनता की समझ में आए ऐसी हिन्दी का प्रयोग किया है। जिसे सामान्य से सामान्य व्यक्ति आराम से न केवल पढ़ सकता है पर प्रेमचंद जो कहना चाहते हैं, उसे बड़ी आसानी से समझ सकता है। प्रेमचंद ने अपनी भाषा में उच्च कोटि के बिम्ब, उपमा, एवं रूपकों का भी प्रयोग किया है। कहीं-कहीं पर कुछ उर्दू फारसी शब्दों का प्रयोग भी किया है, पर वह व्यक्ति आसानी से समझ सके ऐसे ही हैं। प्रेमचंदजी ने अपी सामान्य शुद्ध भाषा-शैली के माध्यम से ही भारतीय जन को प्रभावित किया और 'कहानी सम्राट' कहलाए।

अध्याय-5 'प्रेमचंद की अन्य कहानियों का वर्गीकरण'' में मैंने प्रेमचंद की बाकी बची हुई कहानियों को 14 विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित किया है। जो इस प्रकार है।

1. सामाजिक एवे पारिवारिक कहानियाँ
2. नारी विमर्श पर आधारित कहानियाँ
3. दलित विमर्श और छुआछूत पर आधारित कहानियाँ
4. ऐतिहासिक कहानियाँ
5. राजनैतिक कहानियाँ
6. साम्प्रदायिक कहानियाँ
7. राष्ट्रप्रेम पर आधारित कहानियाँ
8. शैक्षणिक कहानियाँ
9. बाल-मनोवैज्ञानिक कहानियाँ

10. पशुओं पर आधारित कहानियाँ
11. अंधश्रद्धा पर आधारित कहानियाँ
12. आत्मकथात्मक कहानियाँ
13. आधुनिक साधनों से हो रहे नुकसान पर आधारित कहानियाँ
14. अन्य समस्याओं पर आधारित कहानियाँ

उपर्युक्त वर्गीकरण प्रेमचंद की कहानियों को पढ़ने के बाद किया गया है। उनकी कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं, जिनमें विभिन्न समस्याएं कुछ हद तक एक साथ दिखाई देती हैं उन्हें 'अन्य समस्याओं' पर आधारित कहानियों के अन्तर्गत रखा गया है।

अध्याय-6. उपसंहार के अन्तर्गत मैंने शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है।

यथाशक्ति यथामति किए गए शोधकार्य को मूर्त स्वरूप में विद्वतजनों के चरणों में रखते हुए अपार हर्ष का अनुभव तो कर रही हूँ, पर साथ में संकोच भी हो रहा है। प्रेमचंद जैसे कालजयी रचनाकार के सर्जन का मैं अल्पबुद्धि कैसे विवेचन कर सकती हूँ? किन्तु प्रभुकृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से मैं ये भगीरथ कार्य पूर्ण कर पाई हूँ। साहित्याकाश में मेरे इस प्रयत्न को स्वीकार किया जाय यही अभ्यर्थना है। अस्तु

"सर्वेऽत्र सुखिन: सन्तु सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु:खमाप्नुयात्।।"

"दश मन से, दस वचन से, बारह काया से,
बत्तीस दोषों में, मुझसे कोई दोष यदि लगा हो,
तो उन सभी को, मन, वचन, व काया से

"मिच्छा मे दुक्कडम्"

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. प्रेमचंद-जीवन और कृतित्व - हंसराज 'रहबर' रामलालपुरी, आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी, दिल्ली-6
2. प्रेमचन्द: उनकी कहानीकला-सत्येन्द्र, साहित्य रत्न भंडार, आगरा
3. प्रेमचन्द- डॉ. जगतनारायण हैकरवाला, प्रकाशक-अक्षरपीठ, प्रकाशन-84, मोहिलनगर, इलाहाबाद-6, प्रथम संस्करण- 1972
4. प्रेमचंद: एक अध्ययन- राजेन्द्र गुरू (जीवन,चिन्तन,कला) मध्यप्रदेशीय प्रकाशन, भोपाल, वर्ष-1958
5. प्रेमचन्द विश्वकोष- कमलकिशोर गोयनका, भाग-1, प्रकाशक- साहित्य निधि, सी-38, ईस्ट कृष्णनगर, दिल्ली-110005, प्रथम संस्करण-1981
6. प्रेमचन्द घर में - श्रीमती शिवरानी देवी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
7. नवजागरण और आचार्य रामचन्द शुक्ल-बलीसिंह, शंकर पब्लिकेशन, भजनपुरा, दिल्ली-110053, प्रथम संस्करण-2000
8. पाश्चात्य समीक्षा दर्शन - जगदीशचन्द जैन, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1973
9. नवजागरण के पुरोधा : दयानंद सरस्वती - डॉ. भवानीलाल भारतीय, प्रकाशक-वैदिक पुस्तकालय, परोपकारिणी सभा, दयानन्दाश्रम, केसरगंज, अजमेर, प्रथम संस्करण-1983
10. हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास - भाग-9, संपादक-सुधाकर पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1977
11. भारतीय इतिहास का प्रवाह-पी. सरन्, रणजीत प्रिन्ट एण्ड पब्लिशर्स, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1958
12. भारतीय नवजागरण और भारतेन्दु:नर्मद युग का साहित्य- महावीर सिंह चौहान,अनुस्नातक हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ-विद्यानगर, प्रथम संस्करण-1995
13. हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (भाग-8) संपादक-विनयमोहन शर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1975
14. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण-रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1977
15. भारत का इतिहास-'खण्ड-ख' संपादक-टाटा मेकग्राही, मैन्युअल ऑफ जनरल स्टडीज, टाटा मैकग्रोहिल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009

16. आधुनिक भारत का इतिहास- संपादक-आर.एल.शुक्ल, वाणी प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-2005
17. आधुनिक भारत का इतिहास और स्वातंत्र्य संग्राम (भाग-2)-डॉ. रमणलाल.क.धारैया, युनिवर्सिटी बुक प्रोडक्शन बोर्ड, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1988
18. भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास-बी.एन.लुनिया, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, प्रकाशन वर्ष-1955
19. आधुनिक भारत का इतिहास: एक नवीन मूल्यांकन-बी.एल.ग्रोवर-अनुवाद-मेहता-अल्का, एस. चन्द एण्ड कंपनी, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2005
20. भारतीय राजनीतिक विचारक-डॉ. पुखराज जैन, लोकभारती साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष- 2002
21. भारतेन्दु युगीन साहित्य में राष्ट्रीय भावना-डॉ. पुष्पा थरेजा, राजपाल एण्ड संस पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1978
22. मध्यकालीन भारत का बृहद इतिहास(खण्ड-3) जे. एल. मेहता, विश्वविद्यालय पब्लिकेशन, दिल्ली युनिवर्सिटी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000
23. भक्ति आंदोलन इतिहास और संस्कृति-संपादक-डॉ. कुंवरपाल सिंह, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1995
24. भक्तिकाव्य की भूमिका-प्रेमशंकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1977
25. भारतीय शक्ति साहित्य-डॉ. राजकमल बोरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1994
26. लोकजागरण और हिन्दी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचन्द शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2, प्रथम संस्करण-1985
27. हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, द्वितीय संस्करण- 1976
28. हिन्दी साहित्य कोश- भाग-1, धीरेन्द्र वर्मा, प्रकाशक ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, द्वितीय संस्करण- 1963
29. हिन्दी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचन्द शुक्ल, भूमिका-डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली

30. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास-रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1986
31. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (खण्ड-2) - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण-1994
32. हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास सोलह भागों में(भाग-13) नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1970
33. हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास-डॉ. सभापति मिश्र, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2009
34. श्रेष्ठ कहानियॉ-सम्पादक-डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2009
35. कहानीकार प्रेमचन्द-डॉ. सुशीलकुमार फुल्ल एवं आशु फुल्ल, भावना प्रकाशन, दिल्ली-91, प्रथम संस्करण-2001
36. कहानीकार प्रेमचन्द रचनादृष्टि और रचना शिल्प-शिवकुमार मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2002
37. प्रेमचन्द और शैलेष मटियानी की कहानियों में दलित विमर्श-डॉ. कल्पना गवली, चिन्तन प्रकाशन, 3-ए/119, आवास विलास, हंसपुरम, कानपुर-208021, प्रथम संस्करण,- 2005
38. हिन्दी कथा साहित्य-गंगा प्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक तथा विक्रेता, भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, सं. 2008 वि.
39. भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन और हिन्दी साहित्य-डॉ. कीर्तिलता, हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1967
40. 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव-डॉ. भगवानदास माहौर, प्रकाशक-जयकृष्ण अग्रवाल, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, - 1976
41. साहित्य धारा-प्रकाशचन्द गुप्त प्रकाशक-ओमप्रकाश बेरी, हिन्दी प्रचारक पुस्तक, पोस्ट बाक्स, नं. -70, ज्ञानवापी, बनारस, प्रथम संस्करण-1956
42. हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास-डॉ. लक्ष्मीलाल वैरागी, प्रकाशक-विजेन्द्र कुमार संघी, संघी प्रकाशन, सी-177, मालवीय नगर, जयपुर-302017

43. हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास-डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, प्रकाशन-साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग, प्रथम संस्करण-1953
44. हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन-डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा, प्रकाशक-फूलचन्द प्रतापचन्द, संचालक-सरस्वती पुस्तक सदन, मोतीकटरा, आगरा, प्रथम संस्करण-सं.-2015 वि.
45. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में लक्षित अलगाव की आवधारणा-डॉ. बिन्दू दूबे, कला प्रकाशन, बी-33/33-ए-1, न्यु साकेत कालोनी, बी.एच.यू. वाराणसी-221005, प्रथम संस्करण-2000
46. प्रेमचन्द एक विवेचन-डॉ. इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण संशोधित
47. कहानी कला और कलाकार-श्री व्यथित हृदय, रामनारायण लाल प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1953
48. प्रेमचंद भारतीय साहित्य संदर्भ-डॉ. निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, 61-एफ, कमलानगर, दिल्ली-110007, प्रथम संस्करण-1981
49. प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित समस्याएं - डॉ. एम. विमला, जयभारती प्रकाशन, 267-बी, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3, प्रथम संस्करण-2003
50. प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियॉं - कान्ती शर्मा (भाग 1 से 5), प्रकाशक-संस्कृति साहित्य, 30/35 ए, शॉप न.-2 गली नं.-1, विश्वासनगर, दिल्ली -110032 , संस्करण-2006
51. प्रेमचंद साहित्य में दलित चेतना-डॉ. बलवन्त साधू जादव, अलका प्रकाशन, 128/106, किंदवई नगर, कानपुर-11, संस्करण-1992
52. प्रेमचंद और गांधीवाद-रामदीन गुप्त (प्रेमचंद साहित्य का एक नवीन दृष्टिकोण से वैज्ञानिक एवं शोधपूर्ण अध्ययन) प्रकाशक-रामकृष्ण शर्मा हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली, प्रथम संस्करण-मार्च-1961
53. कहानीकार प्रेमचंद-डॉ. कुमारी नूरजहॉं, हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ-3, प्रथम संस्करण-जनवरी-1975
54. प्रेमचंद और भारतीय किसान-डॉ. रामवृक्ष, वाणी प्रकाशन, 61-एफ, कमलानगर, दिल्ली-110007, प्रथम संस्करण-1982
55. हिन्दी पत्रकारिता:प्रेमचंद और हंस-डॉ. रत्नाकर पाण्डेय, प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-110030, संस्करण-1988
56. प्रेमचंद का कथा संसार- संपादक-डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, डॉ. बादामसिंह रावत, डॉ. राजेन्द्र कुमार गढ़वालिया, गिरनार प्रकाशन, 2/27, शिव सोसायटी, मेहसाना-384002, संस्करण-अगस्त-1980

57. प्रेमचंद और अछूत समस्या-कांतिमोहन, जनसुलभ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1982
58. प्रेमचंद-जीवन,कला और कृतित्व-हंसराज रहबर, साक्षी प्रकाशन, एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032, प्रथम संस्करण-1949, नवीन एवं संशोधित संस्करण-2006
59. प्रेमचंद और उनका युग-राम विलास शर्मा, मेहरचंद मुंशीराम प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता, नई सड़क, दिल्ली-6, संस्करण-2006
60. दलित साहित्य (वार्षिकी) 2005, संपादक- जयप्रकाश कर्दम, प्रकाशक-नरेश प्रकाशन, म.न. गली नं. -4, दुर्गापुरी एक्स, शाहदरा, दिल्ली-110032, संस्करण-2005
61. प्रेमचंद युगीन भारतीय समाज-इन्द्रमोहन कुमार सिन्हा, प्रकाशक-बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, कदमकुंआ, पटना-800003, प्रथम संस्करण-मई-1974, पुन: प्रकाशन -2000

<u>सहायक-ग्रंथ</u>

1. आचार्य रामचन्द-पुनर्मूल्यांकन, आतुर प्रकाशन, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, प्रकाशन वर्ष-1984
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य (1947-1962) संपादक-डॉ. रामगोपाल सिंह चौहान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र-विकास-डॉ. बेचन, सन्मार्ग प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण-मार्च-1965
4. नया साहित्य: नये प्रश्न -नन्ददुलारे वाजपेयी, रामजी वाजपेयी, विद्यामन्दिर,ब्रह्मलाल,वाराणसी-1 ,तृतीय संस्करण-1963
5. हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन- शर्मा ब्रह्मदत्त, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा
6. पाश्चात्य साहित्य लोचन के सिद्धान्त-लीलाधर गुप्त, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष-1952
7. दलित चेतना से अनुप्रणित हिन्दी उपन्यास, एन.एस.परमार, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन युनिट,एम. एस. यनिवर्सिटी, बड़ौदा-2, प्रकाशन वर्ष-2000
8. अस्तित्ववाद और नयी कहानी-डॉ. लालचन्द्र गुप्त 'मंगल', शोध प्रबन्ध प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1975
9. हिन्दुस्तानी कहावत कोश अनुवादक और संशोधक-कृष्णानन्द गुप्त, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2006
10. उत्तर मुगलकालीन भारत का इतिहास-सतीश चन्द, मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली
11. भारतीय इतिहास का प्रवाह-पी. सरन्, रणजीत प्रिन्ट एण्ड पब्लिशर्स, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1958
12. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तक-धर्मचन्द जैन, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2000
13. भारत में अंग्रेजी राज पहली जिल्द-सुन्दरलाल
14. नवजागरण और छायावाद-महेन्द्रनाथ राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-2, प्रथम संस्करण-1970
15. आधुनिक भारतीय शिक्षा इतिहास और समस्याएं-पी.डी. पाठक और जी.एस.पी.त्यागी,विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रकाशन वर्ष-1976
16. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं-पी.डी. पाठक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,प्रकाशन वर्ष-1976

17. आधुनिक भारत नी सामाजिक संस्थाओं- ए.जी.शाह,, जगदीश के दवे, रचना प्रकाशन,अहमदावाद, प्रकाशन वर्ष-1976-77
18. भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र-सत्यपाल रूहेला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर, प्रकाशन वर्ष-1972
19. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन-एम.एल.श्रीनिवास, युनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड,अहमदावाद, प्रकाशन वर्ष-1975
20. महासत्ताओनो आधुनिक आर्थिक विकास-एम.पी.पंडया, भारत प्रकाशन, अहमदावाद, प्रकाशन वर्ष-1962
21. आधुनिक भारतीय समाजवादी चिन्तन-डॉ. शोभा शंकर, साहित्य भवन पब्लिशर, आगरा
22. आधुनिक भारतीय शासन-गोरखनाथ चौबे, रामनारायण लाल प्रकाशन, इलाहाबाद,
23. शिक्षणनो इतिहास- मणिशंकर रजनीकांत भट्ट, आ.आर.सेठ कंपन अहमदावाद, प्रकाशन वर्ष-1970
24. भारतीय शिक्षा का इतिहास-बी.पी.जौहरी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रकाशन वर्ष-1984
25. भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएं-डॉ. महेशचन्द्र सिंघम, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर, प्रकाशन वर्ष-1971
26. अर्वाचीन भारतीय केणवणीनो विकास-डॉ. धनवंत अेम.देसाई, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन युनिट,एम.एस. यनिवर्सिटी, बड़ौदा-2, प्रकाशन वर्ष-1969
27. हमारी शिक्षा-गणेश प्रसाद सिंह, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन, वाराणसी
28. हिन्दी नवजागरण और संस्कृति-शंभुनाथ, आनंद प्रकाशन, कलकत्ता, प्रकाशन वर्ष-2004
29. प्रेमचंद की विरासत-राजेन्द्र यादव, समसामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2006
30. हिन्दी साहित्य-डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद, प्र.सं.-1958
31. हिन्दी साहित्य आलोचना ग्रंथ(1947-1971)-महाजन यशपाल, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1971
32. हिन्दी साहित्य आठवां दशक-सी.पान्डे, सरस्वती मंदिर, काशी, प्रकाशन वर्ष-1945
33. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी-नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष-1985
34. हिन्दी साहित्य का आधुनिक युगवाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-7, प्र.सं.-1984
35. हिन्दी साहित्य का आदिकाल-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद, पटना, प्रथम संस्करण-1952, द्वितीय संस्करण-1957

36. हिन्दी साहित्य का अतीत-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दल्ली-7, संस्करण-1994
37. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास-बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली-110031, द्वितीय संस्करण-2002
38. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन-शिवकुमार मिश्र, मैकमिलन कंपनी, मुंबई, प्र.सं.-1978
39. हिन्दी साहित्य के इतिहासों का इतिहास-डॉ. किशोरीलाल गुप्त, विभू प्रकाशन, साहिबाबाद-201005, प्रथम संस्करण-1978
40. हिन्दी साहित्य की भूमिका-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-8, छठा संस्करण-1949
41. हिन्दी साहित्य परिवर्तन के 100 वर्ष-ओमप्रकाश श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1969
42. प्रेमचंद और साहित्य की परमपरा-कुंवरपाल सिंह, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1980
43. प्रेमचंद के उपन्यास कथा संरचना-श्रीमती मीनाक्षी श्रीवास्तव, देवनागर प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण-1998
44. प्रेमचंद का कथा संसार- संपादक-डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, डॉ. बादामसिंह रावत, डॉ. राजेन्द्र कुमार गढ़वालिया, गिरनार प्रकाशन, 2/27, शिव सोसायटी, मेहसाना-384002, संस्करण-अगस्त-1980
45. प्रेमचंद का नारी चिन्तन-गीतालाल, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली प्रकाशन वर्ष-1964
46. प्रेमचंद कलम के सिपाही-अमृतराय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष-1962
47. प्रेमचंद एक जीवन-अमृतराय, पीपल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1982
48. हिन्दी कहानी का रचना शास्त्र-डॉ. धनंजय वर्मा, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1988
49. कहानी:प्रवृत्ति और विश्लेषण-सुरेन्द्र उपाध्याय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1996
50. नयी कहानी प्रतिनिधि हस्ताक्षर-डॉ. वेदप्रकाश 'अमिताभ' एवं डॉ. रंजना वर्मा
51. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1978
52. हिन्दी साहित्य परम्परागत विवाद एवं नये समाधान-डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, एटलांटिक

पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली-2, द्वितीय संस्करण-1989
53. भारतीय भक्ति साहित्य-डॉ. राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन, नई दल्ली-7,प्रथम संस्करण-1994
54. हिन्दी साहित्य का इतिहास समस्याएं और समाधान-वेदप्रकाश गर्ग, कुसुम प्रकाशन, मुजफ्फरनगर-251001, प्रथम संस्करण-2000
55. हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल और रीतिकाल : संधिकालीन प्रवृत्तियॉ-डॉ. विष्णुशरण 'इन्दु' विभू प्रकाशन, साहिबावाद-201005, प्रथम संस्करण-1975
56. मध्यकालीन भक्तिकाव्य की धार्मिक पृष्ठभूमि-डॉ. रामनाथ घूरेलाल शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली-110031, प्रथम संस्करण-1996
57. मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन का सामाजिक विवेचन-डॉ. सुमन शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1974
58. हिन्दी काव्य की निर्गुणधारा-डॉ.पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, तक्षशिला पब्लिशिंग, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1994
59. भक्ति आन्दोलन और साहित्य-डॉ. एम. जार्ज, प्रगति प्रकाशन, मेरठ, प्रकाशन वर्ष-1978
60. हिन्दी और कन्नड़ में भक्ति आन्दोलन का तुल्नात्मक अध्ययन-डॉ. हिरण्मय एम, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रकाशन वर्ष-1956
61. मध्ययुगीन प्रेमाख्यान-डॉ. श्याममनोहर पाण्डेय, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष-1965
62. लोकजागरण और हिन्दी साहित्य-आचार्य रामचन्द शुक्ल, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-7, प्रथम संस्करण-1985
63. कृष्णकाव्य में भावानात्मक एकता-अब्दुल रहीम, जनार्दन प्रकाशन, लखनऊ, प्रकाशन वर्ष-1997
64. रामकाव्य की परम्परा में रामचन्द्रिका का विशिष्ट अध्ययन-गार्गी गुप्त, भारती साहित्य मंदिर, नई दिल्ली
65. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास-रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष-1985
66. हिन्दी संत साहित्य में माधुर्य भाव-डॉ. रामचरण शर्मा, चिन्ता प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1986
67. हिन्दी भक्तिकाल तथा उसके काव्य का पुर्नमूल्यांकन-डॉ. अनुराधा दलाल, नटराज पब्लिशिंग हाउस, करनाल, प्रकाशन वर्ष-1988
68. मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्विक अध्ययन-डॉ. सत्येन्द्र, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम

संस्करण-1960
69. सूरदास-आचार्य रामचन्द शुक्ल, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, प्रकाशन वर्ष-2009
70. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (द्वितीय खण्ड)- डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1989
71. हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति-डॉ. हरपाल, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-7, प्रकाशन वर्ष-2005
72. साठोत्तरी हिन्दी और गुजराती कहानियॅा : एक तुलनात्मक अध्ययन-डॉ. लता एस.सुमन्त, पार्श्व प्रकाशन, अहमदावाद, प्रकाशन वर्ष-1994
73. स्वातंत्र्योत्तर हिन्द कहानी का समाज-सापेक्ष अध्ययन-डॉ. कीर्ति केसर, नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1982
74. साठोत्तरी हिन्दी कहानी और राजनीतिक चेतना-डॉ. जितेन्द्र वत्स, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, प्रकाशन वर्ष-1956
75. हिन्दी कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन-डॉ. शोभा बिसारिया, साहित्य शिल्पी प्रकाशन,लखनऊ, प्रकाशन वर्ष-1987
76. हिन्दी कहानी:सातवां दशक-प्रहलाद अग्रवाल, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-1977
77. प्रेमचन्द्रोत्तर कथा साहित्य में अस्तित्ववाद-डॉ. शुकदेव सिंह, अनुपम प्रकाशन,पटना
78. प्रेमचन्द स्मृति-हंस प्रकाशन, इलाहाबाद
79. भारतेन्दु हरिश्चन्द और हिन्दी नवजागरण-डॉ. रामविलास शर्मा
80. हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वितीय संसकरण-1976
81. प्रेमचंद कथा-साहित्य में हास्य व्यंग्य-डॉ. कृपाशंकर मिश्र 'निर्द्वन्द्व' प्रकाशक- राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर, अमीनाबाद,लखनऊ प्रथम संस्करण-जून-1980
82. प्रेमचंद के नारी पात्र-ओम अवस्थी प्रकाशक-नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 26-ए, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली प्रथम संस्करण-दिसम्बर-1962
83. आधुनिक हिन्दी साहित्य-सच्चिदानंद वात्स्यायन, प्रथम संस्करण-1976,प्रकाशन-राजपाल एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली
84. प्रेमचंद और जनवादी साहित्य की परम्परा-डॉ. कुंवरपाल सिंह,'सव्यसाची',प्रकाशक-रीना राय, भाषा प्रकाशन 453, पाकेट-2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063, प्रथम संस्करण-1980

85. समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद-डॉ. महेन्द्र भटनागर, प्रकाशक-ओमप्रकाश बेरी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पो.बाक्स नं.-70, ज्ञानवापी, वाराणसी, प्रथम संस्करण-नवम्बर-1957
86. भारतीय जनजागरण और प्रेमचंद के उपन्यास-डॉ. सत्यवती मित्तल, प्रकाशक-प्रकाशन संस्थान 4715/21, दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1999
87. हिन्दी साहित्य:बीसवीं सदी-नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1983
88. भारतीय समाज की समस्याएं और प्रेमचंद -जितेन्द्र श्रीवास्तव, शब्दसृष्टि प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2002
89. भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या-जगजीवन राम, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
90. भारतीय समाज तथा संस्कृति -डॉ. एम.एल. गुप्ता, साहित्य भवन, आगरा
91. भारतीय सामाजिक समस्याएं-डॉ. एम.एल. गुप्ता, साहित्य भवन, आगरा
92. भारत का इतिहास-डॉ. रोमिला थापर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
93. भारतीय चिन्तन परम्परा-डॉ. के. दामोदरन, युनाइटेड पब्लिकेशन, दिल्ली
94. भारतीय साहित्य कोश -डॉ. के. दामोदरन, युनाइटेड पब्लिकेशन, दिल्ली
95. भारत का सांस्कृतिक इतिहास-डॉ. हरिदत्त विद्यालंकार, ऋषभचरण जैन एण्ड संस, नई दिल्ली
96. 1857 के स्वाधिनता संग्राम का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव - डॉ. भगवानदास माहौर, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, प्रथम संसकरण-1976
97. आधुनिक भारतीय समालवादी चिंतन-डॉ. शोभा शंकर, साहित्य भवन पब्लिशर, आगरा
98. प्राचीन भारतमां शिक्षण- ए. एस. अल्तेकर, गुजरात युनिवर्सिटी प्रकाशन, अहमदाबाद, प्रकाशन वर्ष-1957
99. केणवणीनुं नवनिर्माण कोठारी शिक्षण पंचनी भलामणो - डॉ. धनवंत देसाई, आर. आर. सेठ कंपनी, मुंबई
100. Histry of Modern Indian & Indian Freedom Movements Part-I (1885-1919), University Book Production Board, New Delhi, 1988
101. Education in India-S.N. Mukerji, Ahcarya Prakashan, Baroda, 1969